International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.newresearchjournal.com/academic
Volume 1; Issue 3; March 2016; Page No. 65-67

अरूणाचल प्रदेश के लोक काव्य

डॉ0 जयराम त्रिपाठी

सहायक प्रोफेसर, भारत रत्न, बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय, फतेहपुर

सारांश

अरूणाचल प्रदेश में कई जातियां निवास करती है जो अरूणाचल प्रदेश की सीमाओं को पार करके आयी थीं। वे अपने साथ अपने मूल पूर्वजीय क्षेत्रों की संस्कृति सभ्यता भी लायी थी। अतएव उनके संस्कार अपने अपने जाति समूहों के आधार पर निर्भर है। उनके लोकगीत अपनी–अपनी जाति संस्कृतियों के आधार पर प्रचलित है। विभिन्न वाह्य क्षेत्रों से आने के कारण उनकी भाषाओं एवं बोलियाँ भी भिन्न हैं। इसी कारण अरूणाचल प्रदेश में एक प्रांत भाषा बनाना भी कठिन हो रहा है। बौद्ध धर्मानुयायी जातियां अपनी अलग भाषा का दावा करती है। आदी जातियां अपनी आदी भाषा को आदी क्षेत्रानुसार सुदृढ़ कर रही है और वाज्जू, ताडसा, एवं नोक्ते जातियां अपनी अलग एक भाषा को प्रचलित कर रही हैं। अतएव भाषाओं एवं बोलियों में असमानता होने के कारण जातियों में अनेक विषयों पर अलगाव रहता है।

मूल शब्दः अरूणाचल प्रदेश , लोक–गीत एवं संस्कार गीत

प्रस्तावना

अरूणाचल प्रदेश गिरि–अरण्य प्रांत होने के कारण कृषि कार्य में पिछड़ा हुआ है। क्षेत्रीय फसलों की पैदावार अननतशील नहीं है फिर भी लोग प्रसन्नवित्त रहते हैं, वे कर्मण्य हैं अपनी जाति–समाज के अनुयायी हैं उनके समाजों में लोककाव्य का अत्यधिक महत्व है। प्रत्येक कार्य के लोककाव्य को प्रमुखता दी गयी है लोककाव्य के अन्तर्गत लोककाव्य गाथायें एवं लोक–गीत जनकंठों से उच्चरित होते रहते है। आदी समाज में अनेक उत्पत्ति विषयक गीतों का प्रचलन है। उत्पत्ति विषयक गीतों में जोंक से लेकर हाथी उत्पत्ति गीत तक मिलते है। धान से लेकर अन्य कई फसलों के अन्नों की उत्पत्ति का वर्णन उत्पत्ति–काव्यों में ही मिलता है। अरूणाचल प्रदेश में लोककाव्य की दृष्टि के अनुसार निम्नलिखित विषय अग्रणी हैं –

1 बालगीत, 2 स्त्रीगीत, 3पुरूषगीत, 4 संस्कारगीत, 5 ऋतुगीत, 6 श्रमगीत, 7 नृत्यगीत, 8 विविध गीत :

बालगीत – बच्चों के मनोरंजनार्थ अरूणाचल प्रदेश के समस्त जाति–समाजों में बालगीतों का प्रचलन है। मातायें अपने बच्चे को पीठ पर कपड़े की झोली में रख बांध लेती हैं और बालगीत गुनगुनाती हुई अपने कार्य करती रहती हैं। बच्चों को झूला अत्यधिक प्रिय है अतएव पालना में बच्चों को लिटा दिया जात है। उसको सुलाने या झुलाने के लिए घर का कोई न कोई सदस्य पालना को झोंका देता रहता है और बालगीत में लोरी गाता है। गीत की मधुर ध्वनि सुनता हुआ बच्चा सो जाता है। बड़े होकर बालक–बालिकाएं खेलते हुए गीत गाने लगते है। बालक–बालिकायें अपने से बड़े लोगो से कहानियां एवं गीत सुनने के शौकीन होते है। बाबा एवं दादी से बालवर्ग अधिकतर कहालियां सुनते है। कहानियों की भाषा गद्य एवं पद शैली की बुनावट से बनी होती है अतएव बाल वर्ग की बहुत आन्नद आता है। बुनावट से बनी होती है अतएव बाल वर्ग को बहुत आनन्द आता है।

स्त्री गीत – अरूणाचल प्रदेश में स्त्रियाँ पुरूषो से भी अधिक कर्मण्य है। घर से लेकर बाहर तक कृषि कार्यो को वे करती हैं पुरूषो से वे कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। घर में चावल कूटना, भोजन बनाना, वस्त्र बनाना, लकड़ी फाडना, अपोड, (चावल की शराब) बनाना, पशुओं तथा मुर्गियों को खोलना एव बंद करना, बच्चों को भटकाना इत्यादि कार्य स्त्रियों को ही करना पड़ता है। घर से बाहर भी वे कार्य करती है जैसे जंगल से लकड़ी लाना, कृषि कार्य करना, जंगल से सब्जियां एकत्र करना, फल एवं सब्जियॉ बेंचने जाना। स्त्रियों का एक पल भी कर्महीन नहीं कहा जा सकता है। परिवार में स्त्री की जो प्रमुख भूमिका महत्वपूर्ण रहती है उसे परिवार के अन्य सदस्य पूर्णरूपेण नही निभा सकते हैं। विभिन्न कार्यो में उलझी हुई स्त्री गीतों की गुनगुनाहट नहीं भूलती हैं। समाज में अनेक पर्व एवं उत्सवों का आयोजन होता रहता है। अतएव इन अवसरों पर स्त्रियां भी लोकगीत गाती हैं। बिना पर्व एवं उत्सवों के भी घर में प्रसन्नता का वातावरण बनाने के लिए घर की स्त्रियां बैठकर गीत गाती हैं। गीत गाती हैं स्त्री गीतों में प्रेम, संयोग, वियोग, पति, पारा दिये गये कपटीं का चित्रण और गरीबी–अमीरी के भाव का वर्णन होता है।

संस्कार गीत – मनुष्य मैदान में रहता हो, पहाड़ों में रहता हो, जंगलों में रहता हो या द्वीपों में और भले वह सभ्य हो या असभ्य परन्तु असके कुछ संस्कार होते हैं जिनको वह करता है। अरूणाचल प्रदेश में भी लोग जन्म से लेकर मृत्यु तक संस्कार मानते हैं। यहॉ की जातियां यज्ञोपवीत संस्कार नहीं करती हैं। बच्चे के जन्म पर खुशियॉ मनाई जाता है। स्त्रियां गीत गाती है। विवाह संस्कार के समय अनेक विवाह गीतों का प्रचलन है। बौद्ध जातियों के विवाहोत्ववों में अत्याधिक धूमधाम देखी जा सकती है। गालौड़ग जाति के विवाहों में अत्याधिक प्रसन्नता एंव खर्च को देखा जा सकता है। अनेक देवी–देवताओं की पूजाओं के साथ विवाह संस्कार सम्पन्न होता है। विवाहोत्सव के अवसर पर श्रृंगार रस से ओत प्रोत गीतों को अत्यधिक गया जाता है।

ऋतु गीत – प्रकृति की सुन्दरता ऋतुओं के गमन–आगमन से बढ जाती है। प्रत्येक ऋतृ का प्रभाव मानव जीवन पर ही नहीं–समस्त जड़ और चेतन तत्तुवों पर पड़ता है। ग्रीष्म, वर्षा और जाड़े की ऋतुयें मुख्य हैं। ऋतु गीतों में प्राकृति वातावरण के वर्णन से लेकर जीवन के सुख–दुखों का वर्णन मिलता है बसंतागमन में विभिन्न वृक्षों एवं पादपों पर फूलों का खिलना प्रारम्भ होना, विभिन्न प्रवासी पक्षियों का आना–जाना तथा जीव–जंतुओ का दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक है। अरूणाचल प्रदेश प्राकृतिक दृष्टि से सुन्दर है। भुटान, तिब्बत और चीन की सीमाओं से अरूणाचल प्रदेश की सीमायें जुड़ी हुई हैं। अतएव वहॉ के पर्वतों पर बर्फ का जमना तथा पर्वतीय हवाओं में बदलाव आना ऋतृ परिर्वतन का प्रभाव होता है।

यही प्रभाव वहां के निवासियों के जीवन पर पड़ता है। मनुख्य का मन प्रकृति के सन्निकट है अतएव हृदय में उपजे भाव अधरों पर आकर गीत बन जाते हैं या परम्परागत चलते हुए लोकगीतों को मानव–मन गुनगुनाने लगता है। सियांग क्षेत्र में लेता है। आपातानी बोली के एक लोकगीत में मेना पक्षी की मधुर ध्वनि का अत्यन्त हृदय प्रभावी वर्णन किया गया है। लोकगीत देखिए –

तापाड. पुतवपा कालु, ताले पुदिका कालू,
दिते लातका काल, तानी ताजाका कालू।
कताड. पेतका कालू, बालिड. अरका कालू।
इयागी अतका कालू, जामे जताका कालू।
बालिड. निरा कालू, तामे तरका कालू,
सिलि तपला कालू, नुका निपा कालू।
काकुड. हिलके कालू, तापाड. तुतपा कालू। [1]

इसका भावर्थ इस तरह है कि जंगली मैना बहुत सुन्दर है। उसकी सुन्दरता की अपेक्षा उसकी ध्वनि अधिक मधुर है। तापाड. और पुतप चिड़ियाँ लयबद्ध होकर गा रही हैं। इनके स्वर अरका पर से सुनाई पड़ रहे है। तुम्हारी मधुर ध्वनि जाम एवं जतका वृक्षो से आती हुयी मेरे मन एवं हृदय को चुरा रही है। हम तुम्हारे मधुर गीतो के पीछे पागल हैं। यद्यपि जलधारा की मछलियाँ तक तुम्हारी मीठी आवाज को सुनने को उत्सुक हैं। जिस प्रकार आकाश के तारे पानी में, प्रतिबिम्बित होते है। सुन्दरता मन को मोह लेती है। उसी प्रकार तुम्हारा मधुर गीत भी हमारे मन एवं हृदय को पागल बनाता है। अरूणाचल प्रदेश की प्रत्येक बोली में ऋत गीतों की कमी नहीं है। सोलुड. पर्व के अवसर पर मिन्योंग लोग सोलुड. गीतों को गाते हैं जो भादों एवं कुवांर के महीनों में ही अच्छे लगते हैं।

अरूणाचल प्रदेश में स्त्री–पुरूष दोनों श्रम करते हैं। खेतों में स्त्री–पुरूषो के श्रम–सहयोग से ही फसलें खड़ी हो पाती है। यहाँ कोई भी व्यक्ति कमजोर नहीं है। कर्म को ही प्रधानता दी जाती है। स्त्रियां घर से खेत तक अनेक कार्यो को करती हैं। वे धान कूटूने, भोजन पकाने और वस्त्र बनाने में प्रवीण तो होती ही हैं और खोतो में बवडा जंगल साफ करना, बीज बोला, रोपाई करना, निरवाई करना और फसल काटना इत्यादि कृषि कार्य पुरूषों के साथ करती हैं। जंगल में लकड़ी काटना और ढोकर घर को लाना भी उनका कार्य है। पुरूष कृषि कार्यो से लेकर आखेट तक करते हैं। अतएव अरूणाचल निवासियों का जीवन कार्मण्यतापूर्ण है। बृद्ध लोग मोढ़े, चटाइयाँ हेट, तूणीर और रस्सियां बनाने जैसे कार्य करते हैं। कोई भी व्यक्ति खाली बैठा नहीं मिलता है। जहॉ कर्म है वहीं लोकगीतों की मिठास भी है। स्त्रियाँ जब धान कुटती हैं तब वे अपने जीवन में आये दुःख–सुखों का वर्णन या भावी साथी के प्रति स्वप्न पूर्ण कल्पनाओं का चित्रण लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त करती है। एक लड़की धान कूट रही है और वह गाती जा रही है –

दोन्यी लौडा ए आतेल दुडं.इ
दिते ऐ मयी डोन्यिनी ए दु के दुने
पोलो युमा ऐ आतेल दुड.इ
कोराड. ए मयी, झेन्यिनी ए तोके दुने।
ड.ो पोपिल कोपे बतदुअइ मिलो
बिरो नोके परेत्ताड. को पे इदुअइ मिले बिरो
नेके येको दैलिक मिडेला। [2]

भावार्थ इस तरह के कि दिन और रात समान हैं लेकिन पहाड़ियां और नदियां मेंरे लिए भिन्न हैं। यदि मैं एक तितली होती तो उड़कर तुम्हारे घर पहुँच जाती। यदि मैं एक चिड़िया होती तो तुम्हारे साथ उडकर कही दूर चली जाती। तीरप क्षेत्र में खेतों में कार्य करते हुए लड़के लड़कियां एक दूसरे के प्रति दूर–दूर से ही लोकगीत गाते रहते हैं। प्रश्नोत्तर रूपी ये लोकगीत सुनने में अत्याधिक आनंद देते हैं वान्यो बोली के एक लोकगीत की हृदयस्पर्शी मधुरता अनुभव कीजिए –

लड़का – अवान जुप–कोवा सिमाड़–मा लड़ जिन
सेन ले यान ल जहाड़ सिछया–मा नाले
अमाड़–जा।

अर्थात – मैं व्यर्थ ही रात में स्वप्न में मछलियां पकड़ता हूँ और तुमको देखता हूँ कि तुम मेरी गोद में अपना सिर रखकर सोती हो।

लड़की – याक जॉ–जा–ला–ल–ए मैपा पाक–ले–जॉ
आ–ने–ने ए सी यॉ तान–दाइ।

अर्थात – लम्बे हाथों से फलों को चुना जा सकता है। उसी तरह मधुर शब्दों से लड़की को आकर्षित किया जा सकता है।

सी–माड.–मे–फ–मे–ना–मां कइला मइ–मई
लाम मा कइ–हि–ल आन–दाइ।

अर्थात – मैं स्वप्न में तुम्हारी गोद में बैठती हूँ, किन्तु दिन मे तुम मुझसे बहुत दूर रहते हो। मैं दिन में तुमको किसी रास्ते पर नहीं मिल पाती हूँ।

नृत्यगीत – अरूणाचल प्रदेश में नृत्यों का विशेष महत्व विभिन्न पर्वो, उत्सवों पर बढ़ जाता है। बौद्ध जातियों में अनेक नृत्य प्रसिद्ध हैं नर्तक मुखौटा को लगाकर नृत्य करते हैं। नृत्यों में स्त्री–पुरूषों दोनों भाग लेते हैं। कभी स्त्री नृत्य विशेष आयोजनों में किए जाते हैं जिसमें पुरूष नृत्य नहीं करते। कुछ पुरूष नृत्य भी ऐसे है जिनमें स्त्रियां भाग नहीं लेती। नृत्यों को प्रभावशाली बनाने के लिए लोकगीतों को गाया जाता है तथा वाद्ययंत्रों को बजाया जाता है। विवाह के अवसर पर बौद्ध जातियाँ भाग नहीं लेतीं। नृत्यों को प्रभावशाली बनाने के लिए लोकगीतों को गाया जाता है तथा वाद्ययंत्रों को बजाया जाता है। विवाह के अवसर पर बौद्ध जातियां नृत्यायोजन में नृत्यगीत गाती हैं। सियांग क्षेत्र में आदी आतियां विवाह, जन्म एवं अतिथि स्वागत में नृत्य यान करती है। फसलों की सुरक्षा के लिए पूजा नृत्य किये जाते है और देवी–देवताओं की आराधना में भी नृत्यगीतों को, प्रदर्शित किया जाता है। जब दो युवा हृदय एक दूसरे के भावों में उलझ जाते हैं तब वे स्वयं नृत्यगीतों में खो जाते हैं। सियांग क्षेत्र निवासी मिन्योंग, पदम और गालोड.ग जातियां सौलुड.ग पर्व में अपनी–अपनी निवासी मिन्योंग, पदम और गलोड़ग जातियां सौलुड.ग पर्व में अपनी–अपनी शैली से नुत्यगान करती है। धर्म–पुजारी एवं ओझागण (झांड़–फूंग करने वाले जादूगर) भी शक्ति का आह्वान करते समय नृत्यगान करते हैं। बलिपूजा में पुजारी विशेष मुद्राओं से नृत्यगीत गा–गा कर देवी–देवताओं को प्रसन्न करता है। कभी–कभी बीमार व्यक्ति को ठीक करने में ग्राम–पुजारी नृत्यगीत का स्वयं प्रदर्शन करता है। इस तरह अरूणाचल प्रदेश में नृत्य गीतों की कमी नहीं हैं।

विविध गीत – उपर्युक्त गीतों के अलावा समाज में ऐसे अन्य भी गीत प्रचलित हैं जिनको गाने के लिए काई समय निश्चित नहीं होता और न ही किसी प्रकार विशेष आयोजन। कुछ तो गीत मौज मस्ती में गयी जाते हैं। कुछ तो एकाकी गीत होते हैं जिनमें अन्य साथी की आवश्यकता नहीं और न ही श्रोतागणों की आवश्यकता पड़ती हैं कुछ गीत ऐसे है जिनमें उपदेशात्मक विषयों को रखा गया है। कहावतें तथा सूक्तियाँ भी उपदेशात्मक होती है। भावों को समेटे

हुए अनेक लोकगीत समाज में गाये जाते हैं। सम्पूर्ण अरूणाचल प्रदेश की समस्त जातियों में अनेक भक्ति, प्रधान, दर्शन प्रधान, भावचित्त प्रधान और मंत्र प्रधान गुण वाले लोकगीतों को सामाजिक कल्याण के स्तर पर गया जाता है। जीवन धीरे–धीरे बृद्धास्था की ओर बढ़ता जाता है। नयी पीढ़ी गुजरी हुई पीढ़ी के लोगों को पूर्णरूपेण समझ नहीं पाती है और न ही उनकी तरह वह रह पाती है। परिवर्तन निश्चित है। जीवन, प्रेम और संसार–सबमें परिर्वतन हैं। पुराने लोकगीतों की अपेक्षा नयी पीढ़ी ने नये लोकगीतों को अधिक स्वीकार किया। लम्बे–लम्बे कथानको वाले काव्यों को अब बहुत कम सुना जाता है क्योंकि व्यक्ति फुर्सत के क्षण नहीं पा रहा है। सूर्य–चंद्र की प्रार्थना में इदूमिशमी समाज के गायक निम्नलिखित गीत गाते हैं –

इन्नी लाप्पासी–प्रासिवे
एलाड.ा लान्दासी नाला वे
ल्यूमेगा कोटुवी प्राड़ीएवे
गकमा ब्रिन्जा नावा वे।
खिन्जी एदुसी प्रासिवे।
खेन्जा एबासी नालावे।
इनुया हेर्रान प्रासिवे
मेंलानी मागुली नाला वे। [4]

इसका भावार्थ इस प्रकार है कि ओ भगवान इन्नी सूर्य हमें धन दो। ओ भगवान एला चन्द्रमा हमें धन दो। हमारा घर लक्ष्मी से भर दो। हम लोग नाच रहे हैं। धनवानों को भी सम्पदा दो। हम नृत्य करते हुए अच्छे बीजों के बारे में पूंछ रहे हैं अच्छे बीजों का देवता केन्जा है। हम उससे अच्छे बीजों के बारे में पूँछ रहे हैं। इनू हेरनि पर मिथुन पशुओं का झुंड है। हमें बहुत ज्यादा मिथुन दीजिए।
इस तरह अरूणाचल, प्रदेश में लोक गीतों का अत्याधिक महत्व है। प्रत्येक सामाजिक कार्यो में लोकगीतों का प्रचलन है। कई गलत प्रथाओं के लोकगीत आजकल नष्ट भी हो गए हैं। जिन्हें नहीं गाया जाता है तथा इन गीतों को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रेसारून, पत्रिका, प्रकाशक रिसच्र डिपार्टमेंट ईटानगर
2. मिन्योड. बोली का लोकगीत–ग्राम रूमगांग वे, तेयांग
3. वान्चो लव सांग्स – संकलनकर्ता – पिनकुमार एम0 बरूवा
4. पत्रिका रेसारून रिप्रिंग–विन्टर इसू सन 1989–प्रकाशक रिसर्च डिपार्टमेन्ट ईटानगर,